

जेन गुडॉल



पुस्तक के विषय में

प्रारम्भ से ही जेन गुडॉल को पशुओं के प्रति तीव्र आकर्षण था। वह धूल-मिटटी से सने केंचुए व अनजाने कीड़े-मकोड़े घर ले आती, और अपनी मां से उनके बारे में पूछती। बचपन से ही जो कुछ भी वह खोजती या समझती, उसे नोट कर लेती। वह शुरू से ही मानती थी कि बड़े होकर उसे पशुओं के साथ ही कार्य करना है।

जेन का सपना तब साकार हुआ जब उसे तंज़ानिया के जंगलों में जाकर बनमानुषों का अध्ययन करने का अवसर मिला। लेकिन पहले ज़रूरी यह था की बनमानुष जेन को स्वीकार करें। उसने बड़े धैर्य से प्रतीक्षा की जब तक कि वे बनमानुष उसे पहचानने और समझने नहीं लगे। बड़े स्नेह से जेन ने उन बनमानुषों का नामकरण भी किया। गंजे सर वाला उम्र-दराज़ मक्ग्रेगोर, बड़े-बड़े कानों वाली फ्लो, और झबरे बालों वाला ऑली, सलेटी दाढ़ी वाला डेविड, विशालकाय गोलायथ, और चुलबुली नन्ही फीफी।

जेन बड़ी सावधानी से बनमानुषों का अध्ययन करती, और सारी जानकारी नोट कर लेती। उसने कुछ ऐसी बातें देखीं जिनकी पहले किसी को जानकारी नहीं थी। विश्व भर के वैज्ञानिकों ने उसकी इन खोजों को महत्वपूर्ण योगदान की मान्यता दी। उनका अन्य पशुओं के अध्ययन का काम अभी भी जारी है, और अपनी नई खोजें वह उजागर करती रहती हैं।



जेन गुडॉल

एलेनोर कॉर

चित्रसज्जा : कीज़ द कीफ्ते

हिंदी अनुवाद : योगेश





"जेन, कहाँ हो तुम?" श्रीमती गुडॉल ने अपनी बेटी को पुकारा। "अब लुका छिपी खेलने के लिए बहुत देर हो चुकी है।" वह बड़ी देर से जेन को पुकार रही थीं।

लेकिन चार साल की जेन खेल नहीं रही थी। वह पडोसी के घर मुर्गियों के दड़बे में अपने बनमानुष गुड्डे जुबली को सीने से लगाए एकदम शांत बैठी थी। उस दिन जेन ने अपने मन में यह निश्चय किया था कि वह देख कर ही रहेगी कि आखिर मुर्गियां अंडे कैसे देती हैं। वह घंटों इंतज़ार करती रही।

आख़िरकार एक मुर्गी ने अंडा दिया। जेन कुछ देर तक अंडे के सुडौल आकार और उसकी चमकदार सुन्दर सतह को निहारती रही। फिर अपनी माँ को यह सब बताने के लिए घर की ओर भाग चली।

जेन का जन्म ३ अप्रैल १९३४ को हुआ था। जब वह तीन साल की थी, तब उसकी छोटी बहन जूडी का जन्म हुआ। जैसे ही जेन ने चलना फिरना सीखा, वह तरह तरह की चीज़ें घर के बाहर से लाकर अपनी मां को दिखाती। कभी कोई मेंढक, या फिर कोई कीड़ा। और कभी धूल मिट्टी में सने बहुत से केंचुए। श्रीमती गुडॉल इन सब चीज़ों के बारे में जेन को विस्तार से बताती थीं। वह चाहती थीं कि उनकी बेटियों में भी वैसा ही प्रकृति का प्रेम विकसित हो, जैसा कि उन्हें स्वयं था।





जब तक जेन आठ साल की हुई, उसने अपने घर के आस-पास के वन्य जीवन के बारे में बहुत सी जानकारी हासिल कर ली थी। उसका घर इंग्लैंड में समुद्र तट पर बसे बॉर्नमाउथ शहर में हुआ था। दिन के समय वह चिड़ियों और जानवरों को ध्यान से देखती, और उनके रहन सहन का अध्ययन करती। जो कुछ भी वह देखती, सावधानी-पूर्वक अपनी नोटबुक में लिख लेती थी।

शाम का समय कहानियों के लिए था। श्रीमती गुडॉल घंटो उन्हें कहानियां पढ़ कर सुनाया करती थीं। जेन को सबसे अच्छी लगती थीं रुडयार्ड किपलिंग की लिखी जानवरों की कहानियां, और टार्ज़न के साहसिक किस्से। वह इन कहानियों को सुनते सुनते दूर देशों के और जंगली पशु-पक्षियों के सपने देखने लगती।

जैसे जैसे जेन की उम्र बढ़ी, उसकी रुचि स्कूल से हट कर वन्य जीवन के अध्ययन की ओर अधिक आकर्षित होने लगी। उसे घर के अंदर रहना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। स्कूल जाते समय वह अक्सर ही रास्ते में रुक कर कभी किसी नए पक्षी को देखने लगती, तो कभी किसी उछलती-कूदती गिलहरी को निहारने लगती। कई बार उसे स्कूल पहुँचने में देर हो जाती, तो वह पहली कक्षा ख़त्म होने तक कहीं छुप कर खड़ी हो जाती। लेकिन टीचर को उसकी टोपी में लगी लाल कलगी झाड़ियों के बीच दिख ही जाती थी।



आख़िरकार श्रीमती गुडॉल को जेन से कहना ही पड़ा कि उसे पढाई में अधिक ध्यान देना होगा। जेन को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा। "भला मुझे स्कूल जाना ही क्यों पड़ता है?" उसने पूछा। "मैं अफ्रीका जाकर पशु-पक्षियों का अध्ययन क्यों नहीं कर सकती?“

"अवश्य कर सकती हो।" उसकी माँ ने कहा।

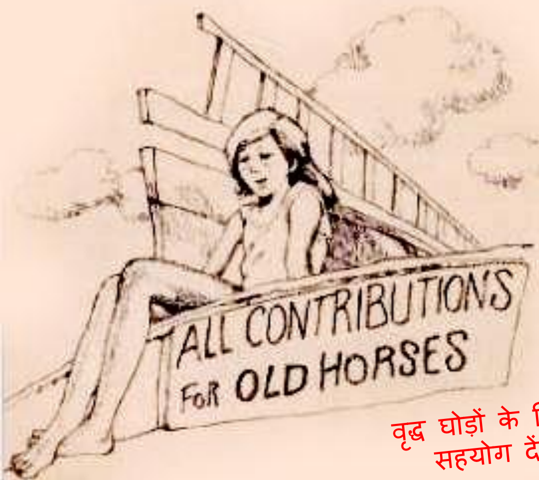
"लेकिन अभी सबसे ज़रूरी है स्कूल में अच्छे नंबर लाना। तभी तुम एक वैज्ञानिक बन सकोगी। और वैज्ञानिक लोग ही अफ्रीका जाकर पशुओं का अध्ययन कर सकते हैं।"



एक ठंडी सांस छोड़ कर जेन बोली, "ठीक है, तो मैं यह काम पूरा कर ही लेती हूँ। कल से मैं समय से स्कूल जाउंगी। और सभी विषयों की ध्यानपूर्वक पढाई करूँगी, भले ही वे मुझे अच्छे न लगते हों।"

उस दिन के बाद से स्कूल में उसके नंबर अच्छे आने लगे। लेकिन स्कूल के बाद वह कभी अपने प्रिय पेड़ पर चढ़ जाती, या चट्टानों पर घूमती फिरती, या फिर समुद्र किनारे टहलती। वह पक्षियों के घोंसले, उनके अंडे, कछुए, कीड़े-मकोड़े, सीपियाँ, और छोटे जानवरों की खोपड़ियां घर ले आया करती।

एक दिन जेन को पता चला कि बूढ़े हो चुके घोड़ों के लिए बनाये गए एक अस्तबल को पैसों की ज़रूरत थी। उसके मन में इसमें सहयोग करने का विचार जागा। उसने घर के लॉन में अपने जमा की हुई प्राकृतिक वस्तुओं की एक प्रदर्शनी लगा दी। और वहां एक तख्ती लगा दी, जिस पर लिखा था : प्राकृतिक वस्तुओं का संग्रहालय, वृद्ध घोड़ों के लिए अपना सहयोग दें।



वृद्ध घोड़ों के लिए सहयोग दें

तीन वर्षों तक जेन के इस संग्रहालय ने अस्तबल के लिए पैसा इकट्ठा किया।

फिर जेन ने एक साप्ताहिक समाचार पत्र लिखना शुरू किया, जिसमें वह छोटे छोटे कीड़ों से लेकर विशालकाय जानवरों तक के बारे में लिखती। श्रीमती गुडॉल "द एलीगेटर" नाम के इस पत्र को टाइप करतीं और जेन व जूडी के मित्रों के लिए उसकी प्रतियां छापतीं।

जेन ने हाई स्कूल की परीक्षा सम्मानजनक अंको से उत्तीर्ण की। लेकिन अभी वह वैज्ञानिक नहीं बनी थी। उसके माता-पिता एक दूसरे से अलग हो गए थे, और विश्व विद्यालय की खर्चीली पढाई के लिए पैसा नहीं था। इसलिए, जेन ने सेक्रेटरियों के प्रशिक्षण-स्कूल में प्रवेश ले लिया। फिर उसे लंदन की एक फिल्म-कंपनी में नौकरी मिल गई।



"मैंने अभी हार नहीं मानी है", उसने अपनी मां से कहा। "जैसे भी हो, मैं अफ्रीका जाकर पशुओं का अध्ययन अवश्य करूँगी।”

श्रीमती गुडॉल ने कहा "यह तो तुम पर ही निर्भर है। यदि तुम्हारे मन में किसी बात की तीव्र इच्छा है, तो तुम्हें उसके लिये संघर्ष करना ही होगा।"

तीन वर्ष बीत गए। जेन एक दोहरा सा जीवन जी रही थी। एक जेन ऑफिस जाकर फिल्मो की कांट-छांट और उनके संपादन का काम सीखती, तो दूसरी घर से बाहर प्रकृति के बीच जाने की इच्छा में खोयी रहती।

फिर अचानक एक दिन उसकी एक पुरानी सहेली, जो केन्या में रहती थी, का एक पत्र आया।

उसने जेन को केन्या आने का न्योता दिया था। जेन को लगा, यही वह अवसर है, जिसका उसे इंतज़ार था। अफ्रीका का देश केन्या अपने वन्य पशुओं के लिए जग प्रसिद्ध था। उसके मन में आशा की किरण जागी, लेकिन तुरंत ही बुझ सी गई। केन्या जाने के लिए हवाई यात्रा के टिकट का पैसा आखिर कहाँ से आएगा? उसकी छोटी सी तनख्वाह तो रहने-खाने के खर्च में ही चुक जाती थी।

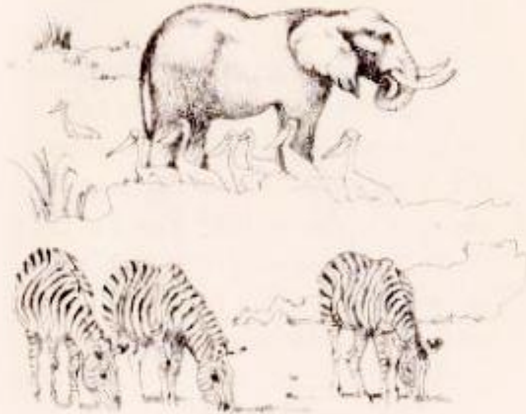
जेन ने फ़ोन करके यह बात अपनी मां को बताई। "मेरे विचार से तुम्हें जाना चाहिए", श्रीमती गुडॉल ने कहा। "घर वापस आकर यहाँ कुछ काम करो। फिर तुम अपनी कमाई की पाई-पाई बचा सकती हो।"

जेन ने ऐसा ही करने का मन बना लिया। लेकिन कितना समय लगेगा पैसे बचाने में? महीनों? सालों?



लेकिन अधिक नहीं कुछ महीनो का समय ही लगा। प्रतिदिन जेन बॉर्नमाउथ के एक रेस्तरां में देर तक काम करती थी। आख़िरकार उसने केन्या के हवाई टिकट का पैसा बचा ही लिया। उसने अपना सूटकेस पैक किया और अपने गुड्डे जुबली को भी खुशकिस्मती की निशानी के तौर पर साथ रख लिया।





सन १९५७ में २३ साल की उम्र में जेन ने पहली बार अफ्रीका की धरती पर कदम रखा। एयरपोर्ट से अपनी सहेली के घर के रास्ते में उसने पहली बार जिराफ, हाथी और ज़ेबरा जैसे जानवरों को खुले जंगल में विचरते देखा। उस दिन उसने जो रोमांच अनुभव किया, उसे वह जीवन भर नहीं भूल पाई।

हालाँकि अपनी सहेली के फार्म पर रहना उसे अच्छा लग रहा था, जेन के मन में एक ही बात घूम रही थी कि कैसे वह जंगली जानवरों का अध्ययन करे। फिर जल्दी ही वह केन्या की राजधानी नैरोबी चली गई। शायद वहां कोई उसकी मदद कर सके।

फिर जेन ने कुछ ऐसा किया कि उसकी ज़िन्दगी ही बदल गई। वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. लुइस लीकी से मिली, जो वहां एक संग्रहालय में काम करते थे। उन्होंने अफ्रीका में अपनी पत्नी के साथ मानव के पूर्वजों का अध्ययन करने में बहुत वर्ष बिताये थे। जेन ने उन्हें बताया कि वह क्या करना चाहती है। उन्होंने उसकी बात ध्यान से सुनी, और मुस्कुराये। "मुझे लगता है, मेरे पास तुम्हारे लिए बिलकुल उपयुक्त काम है," उन्होंने कहा। "क्या तुम मेरी सेक्रेटरी बनना पसंद करोगी ?"

"इससे अच्छा क्या हो सकता है?" जेन खुश होकर बोली। कुछ ही दिनों में उसने केन्या के राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में काम करना शुरू कर दिया। जेन के लिए एक नई रोमांचकारी दुनिया का दरवाज़ा खुल चुका था।



उसने मानव जाति के अध्ययन, यानि एंथ्रोपोलॉजी (anthropology), और जीवाश्मों के अध्ययन, यानि पालिओंटोलोजी (palaeontology) के बारे में सीखा।



फिर उसने लीकी दम्पति के साथ तंज़ानिया के ओल्डूवई गोर्ज (Olduvai Gorge) का सफर किया। उसने लाखों साल पुरानी हड्डियों व अन्य जीवाश्मों को खोजने में उन दोनों की सहायता की। डा. लीकी का मानना था कि इनमे से कुछ जीवाश्म प्रारम्भिक मानवों के थे। सुबह से शाम तक जेन जीर्ण हो चुकी चट्टानों को सावधानी से कुरेदती रहती।

उसने कभी भी तपती गर्मी या कठिन परिश्रम से हुई थकान की शिकायत नहीं की।

नैरोबी लौटते समय डा. लीकी ने जेन को बनमानुषों के एक समूह के बारे में बताया, जो कि तंज़ानिया की तन्गान्यिका झील (Lake Tanganyika) के किनारे रहते थे।

"इससे पहले कि बहुत देर हो जाये, किसी को इन बनमानुषों का अध्ययन करना चाहिए," उन्होंने कहा।

"इंसान बड़ी तेज़ी से इनकी धरती पर कब्ज़ा करते जा रहे हैं। इसके अलावा, जंगली वातावरण में रह रहे इन बनमानुषों का अध्ययन प्रारम्भिक मानव को समझने में भी वैज्ञानिकों की मदद कर सकता है।"

कुछ देर बाद डॉ. लीकी बोले "जेन, मुझे लगता है, तुम यह काम कर सकती हो। क्या तुम कोशिश करना चाहोगी?"

कुछ क्षण के लिए जेन चुप रही। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर वह उत्तेजना भरे स्वर में बोली, "हाँ, बिलकुल। मैं हमेशा से यही तो करना चाहती थी।"

जंगलों में रहने का विचार मात्र ही जेन को रोमांचित कर रहा था। अगले ही दिन वह तन्गान्यिका झील को जाने के लिए तैयार थी। लेकिन यह इतना आसान नहीं था।



उसे पहले यह खोजना था कि इसका खर्चा कौन उठाएगा। उसने बहुत सी उन संस्थाओं को पत्र लिखे जो वैज्ञानिकों की आर्थिक सहायता करती थीं। लेकिन उनमें से अधिकांश जेन को पैसा देने के लिए तैयार नहीं थीं, क्योंकि उसके पास विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं थी।

वह इंग्लैंड वापस लौट आई, और महीनों इंतज़ार करती रही।

उसे लगने लगा था कि शायद उसका सपना अब कभी पूरा नहीं होगा। आख़िरकार, विल्की फाउंडेशन नाम की संस्था उसे छः महीने के लिए खर्च देने को तैयार हो गई। लेकिन तंज़ानिया की सरकार जेन को जंगल में अकेले भेजने को राज़ी नहीं थी। और न ही जेन के दोस्तों में कोई भी उस दूर दराज़ घने जंगल में रहने को तैयार था। आख़िरकार श्रीमती गुडॉल ने खुद जेन के साथ जाने का निश्चय किया।

जेन का यह लम्बा और सफलतापूर्ण अभियान १९६० में प्रारम्भ हुआ। वह और उसकी मां आठ सौ मील लम्बे ऊबड़ खाबड़ रास्ते से होकर किगोमा पहुंचीं, जो कि तन्गान्यिका झील के किनारे स्थित था। यहाँ उन्होंने राशन ख़रीदा और डोमिनिक नाम के एक रसोइये को साथ लिया। अपनी यात्रा के आखिरी १२ मील एक नौका से सफर किया। इस नौका के पीछे बंधी थी एक छोटी सी किश्ती, जो कि उनका एकमात्र साधन थी किगोमा और बाहरी दुनिया से संपर्क रखने का।





जब जेन ने बनमानुषों के इलाके गोम्बे में पहुंच कर वहां के नज़ारे देखे तो वह अपनी सारी थकान और इंतज़ार की घड़ियां भूल गई। झील के तट तक और ऊँचे पहाड़ों की चोटियों तक चारों ओर पेड़ पौधों से भरे घने जंगल थे। जेन को वह स्थान बहुत ही सुन्दर लगा।

लेकिन श्रीमती गुडॉल को बीमारी फ़ैलाने वाले कीड़ों और खतरनाक जंगली जानवरों की चिंता सता रही थी।

डोमिनिक ने दो तम्बू तान दिए और सारा सामान खोला। कुछ जिज्ञासु अफ्रीकी लोग खड़े यह सब देख रही थे। पहली रात जेन ने अपनी चारपाई तम्बू के बाहर सितारों से भरे खुले आसमान के नीचे बिछा ली।

उसे यह जगह सारी दुनिया में सबसे अच्छी महसूस हो रही थी। उसे लग रहा था कि जैसे उसका जन्म यहीं रहने और काम करने के लिए हुआ हो।

पहले कुछ महीनो में वहां के वन विशेषज्ञों ने जेन को उस इलाके के बारे में बहुत कुछ सिखाया। जब जेन ने अकेले खोज-बीन का काम शुरू किया तो उसे बड़े रोमांच का अनुभव हुआ। लेकिन साथ ही निराशा भी हुई। रोज़ाना जेन बहुत सुबह उठती और मीलों जंगल में घूमती फिरती, लेकिन उसे एक भी बनमानुष दिखाई नहीं दिया। वहां अन्य बहुत से जानवर थे, जैसे कि जंगली सूअर, धारीदार नेवले, गिलहरियां, छछूंदर और बन्दर, लेकिन बनमानुष एक भी नहीं।



कभी कभी जेन को उनके ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ें आतीं, और कभी एकाध झलक भर दिखला कर झाड़ियों में छिप जाता। पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर देखने के बावजूद उसे कोई बनमानुष दिखाई नहीं दिया। वह बड़ी उलझन में थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या गलती कर रही है। क्या वह कभी भी निकट पहुँच कर उनका अध्ययन नहीं कर पायेगी?

उन मुश्किल हफ़्तों में श्रीमती गुडॉल ने उसकी बहुत सहायता की। वह तम्बू को साफ़ सुथरा रखतीं और हर तरह का इंतेज़ाम करतीं। उन्होंने जेन के कीड़ों और पौधों के संग्रह में भी बहुत इजाफा किया। अफ्रीकन लोग उनके पास दवाइयां लेने के लिए आते। जल्दी ही अफ्रीकन लोगों से उनकी अच्छी दोस्ती हो गई। लेकिन सबसे खास बात यह थी कि श्रीमती गुडॉल ने जेन का हौसला बँधाये रखा और उसे प्रोत्साहित करती रहीं। उन्हें जंगल का जीवन अवश्य ही कठिन लगा होगा, लेकिन उन्होंने कभी कुछ कहा नहीं। शाम के समय वे जेन को कैंप की अपनी दिनचर्या के रोचक किस्से सुना कर हंसाती थीं।

वर्षों बाद एक बार जेन ने कहा, "कितनी भाग्यवान थी मैं ऐसी माँ की पाकर, जो लाखों में एक हैं। उनके बिना मैं कुछ भी न कर पाती।"



तीन महीने बाद जेन और उसकी मां दोनों को मलेरया हो गया। दोनों के शरीर में इतनी शक्ति भी नहीं थी कि वे किश्ती से डाक्टर को दिखाने किमोगा जा सकते। इसलिए डोमिनिक ने ही उन दोनों का ख्याल रखा। उसे नर्स का काम अच्छी तरह आता था। कुछ हफ़्तों के बाद दोनों मरीज़ फिर से स्वस्थ हो गए।

बीमारी से उठने के बाद पहले ही दिन जेन को बनमानुषों को करीब से देखने का अवसर मिला। वह पहाड़ की छोटी पर चढ़ गई थी, और बनमानुषों के कई समूह उसके नज़दीक पहुंचे। इस घटना से जेन बहुत प्रोत्साहित हुई।



अगली सुबह वह अपने साथ टीन का एक बक्सा ले गई, जिसमें काफी बनाने का सामान, कुछ खाने की वस्तुएं, और एक कम्बल व स्वेटर था।

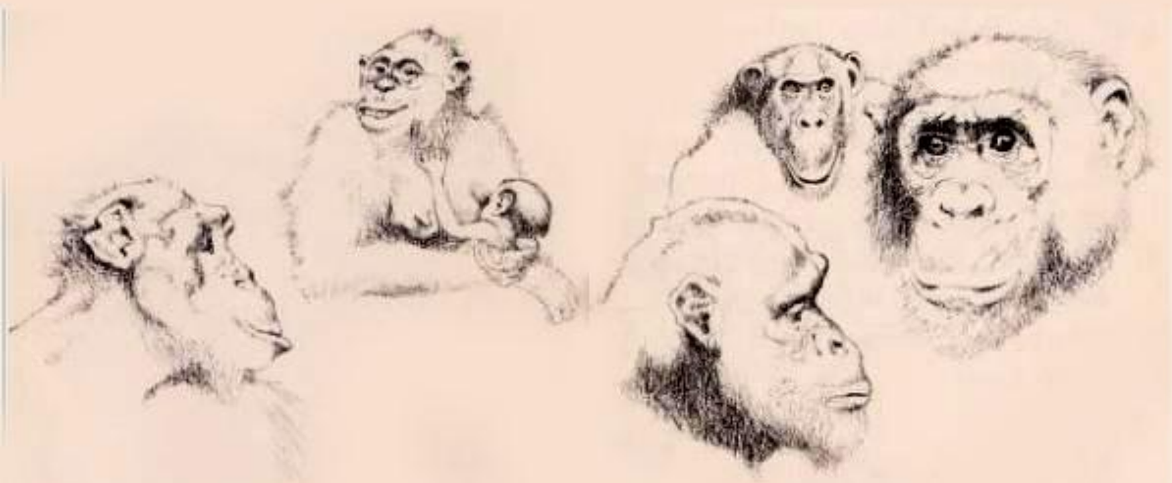
जब बनमानुष पहाड़ के चोटी के निकट पेड़ों पर सोते, तो जेन भी वहीँ रात बिताती।





जैसे कुछ हफ्ते बीते, बनमानुषों ने भी इस दुबली पतली लड़की को, जो चुपचाप उनके आसपास बैठी रहती, स्वीकार सा कर लिया। जेन ने उनमें से कुछ के नाम भी रख दिए। एक गंजी चाँद वाले का नाम रखा मि. मक्ग्रेगोर। और बड़े बड़े कानों और मोटी नाक वाली का नाम था फ्लो।

फ्लो का बच्चा था फीफी जो हर समय अपनी मां से चिपटा रहता था। पीठ और गर्दन पर घने बालों वाली का नाम था ऑली। और वे दो नर जो जेन को सबसे अधिक दिखाई देते, वे थे डेविड ग्रेबिअर्ड, और गोलायथ, जो कि बहुत विशाल और ताकतवर था।



पांच महीने वहां बिताने के बाद श्रीमती गुडॉल इंग्लैंड वापस लौट गईं। उसके बाद जेन और एक वर्ष तक गोम्बे में रही। हालाँकि उसे अपनी मां की कमी महसूस होती थी, लेकिन जंगल में रहने में उसने कभी अकेलापन महसूस नहीं किया। अफ्रीकन लोग उसके दोस्त बन गए थे, और उन्होंने उसके काम में बहुत सहायता की। बहुत से पशु-पक्षी भी जेन से हिल-मिल गए थे। देर रात को भी, जब वह अपने अध्ययन का विवरण नोटबुक में लिखती, कोई उसके साथ होता था। वह था टेरी नाम का एक मेंढक, जो उसकी लालटेन के इर्द गिर्द मंडराते कीड़ों को खाने आ जाता था। क्रिसेंट नाम का एक जेनेट (एक प्रकार का छोटा अफ़्रीकी जानवर), उसके पास केला खाने आ जाता था। और उसका गुड्डा बनमानुष जुबली तो हमेशा ही तम्बू की कुरसी पर बैठा रहता।



धूप हो या बरसात, जेन बनमानुषों का अध्ययन करती ही रहती। "जानवरों के जीवन और व्यवहार को ठीक से समझने का मात्र एक ही उपाय है," उसने कहा, "कि उनका लम्बे समय तक निरीक्षण और अध्ययन किया जाए।"





जेन की खोज-बीन से कुछ महत्वपूर्ण बातें उजागर हुईं। उसके पहले किसी ने भी जंगली बनमानुषों को मांस खाते हुए या औज़ारों का इस्तेमाल करते हुए नहीं देखा था। वे पत्तियों से स्पंज जैसा बना कर उसका इस्तेमाल गड्ढों में से पानी सोखने के लिए करते।



जेन को यह देखने में विशेष रुचि थी कि फ्लो और दूसरी बनमानुष माताएं किस प्रकार अपने बच्चों का पालन पोषण करती हैं।

जंगल का निवास हमेशा सुखकर नहीं होता था। जेन को कीड़ों के काटने और मलेरिया बुखार से काफी परेशानी होती थी, जो कि हर साल बरसात के मौसम में फैलता था। ज़हरीले सांप, भूखे तेंदुए और गुस्सैल नर बनमानुष, इन सभी का डर उसे अक्सर सताता था। लेकिन उसने इन सभी कठिनाइयों और खतरों को स्वीकार कर लिया था। ये सभी उस जीवन का हिस्सा थे, जिसे उसने स्वयं चुना था।

अब नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी (National Geographic Society) जेन के शोध-कार्य का खर्चा उठा रही थी। लेकिन जेन को अभी और वैज्ञानिक शिक्षा की आवश्यकता थी।

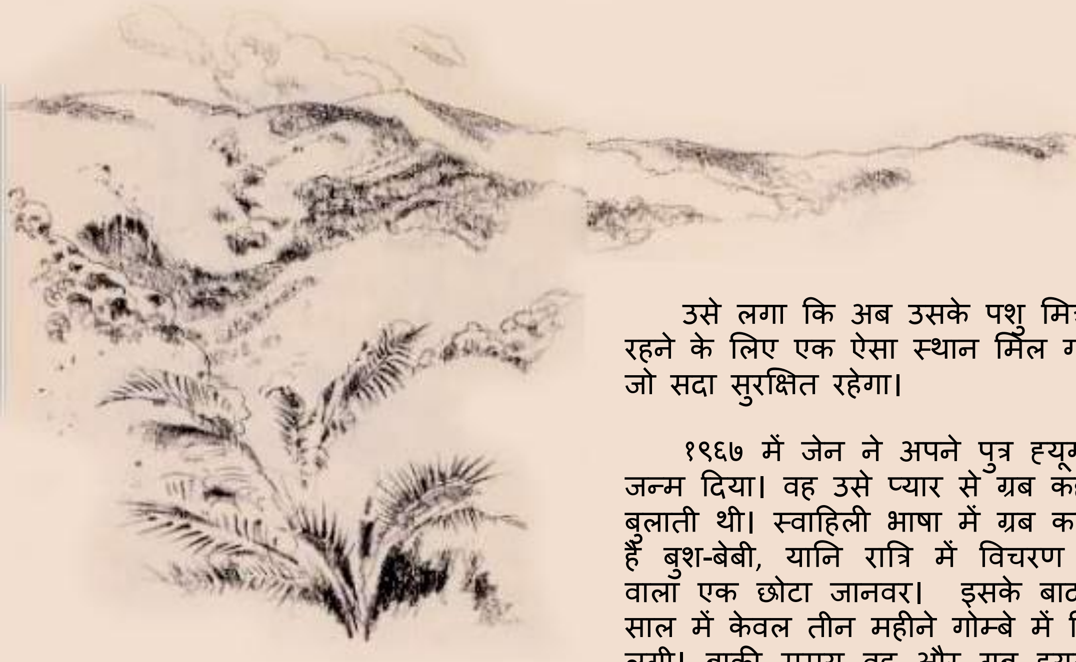
दिसंबर १९६१ में जेन इंग्लैंड वापस लौट कर कैंब्रिज विश्विद्यालय में पढाई करने लगी। अगले वर्ष वसंत ऋतु में वह फिर अपना कार्य जारी रखने के लिए गोम्बे वापस आ गई।

इस बार उसे अधिक समय तक अकेले नहीं रहना पड़ा। नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी ने बैरन ह्यूगो वैन लाविक को बनमानुषों पर एक फिल्म बनाने के लिए वहां भेजा। वह तुरंत ही जेन की ओर आकर्षित हो गया। उन दोनों में प्रेम हो गया, और १९६४ में लंदन में दोनों का विवाह हो गया।

अगले पांच वर्षों तक जेन हर साल जाड़ों में कैंब्रिज में रहती, और गर्मियों में ह्यूगो के साथ अफ्रीका में। वह उसके जीवन का बहुत गौरवशाली दिन था जब उसे इथोलॉजी, यानि पशु-आचरण अध्ययन के क्षेत्र में डॉक्टर ऑफ़ फिलॉसॉफी की उपाधि दी गई।



१९६५ तक जेन और उसके कार्य का महत्व इतना बढ़ गया कि गोम्बे में एक स्थाई शिविर की स्थापना कर दी गई। वैज्ञानिक और छात्र वहां शोध-कार्य और अध्ययन करने के लिए जाते।



आज यह एक बहुत व्यस्त शोध केंद्र है। बनमानुषों की आबादी वाले क्षेत्र को अब राष्ट्रिय उद्यान घोषित कर दिया गया है, जिसमें जेन के प्रयासों का प्रमुख योगदान रहा।

उसे लगा कि अब उसके पशु मित्रों को रहने के लिए एक ऐसा स्थान मिल गया है जो सदा सुरक्षित रहेगा।

१९६७ में जेन ने अपने पुत्र ह्यूगो को जन्म दिया। वह उसे प्यार से ग्रब कह कर बुलाती थी। स्वाहिली भाषा में ग्रब का अर्थ है बुश-बेबी, यानि रात्रि में विचरण करने वाला एक छोटा जानवर। इसके बाद जेन साल में केवल तीन महीने गोम्बे में बिताने लगी। बाकी समय वह और ग्रब ह्यूगो के साथ जंगलों में यात्रा करते, जहाँ ह्यूगो विभिन्न वन्य पशुओं, जैसे शेर, चीतों, लकड़बग्घों, तेंदुओं, और जंगली कुत्तों आदि के चलचित्र बनाता था। जेन इन जानवरों की जीवन-शैली के बारे में लेख लिख कर उसकी सहायता करती।



गोम्बे में लिखी गई अपनी नोटबुक के आधार पर जेन ने अपनी पहली पुस्तक लिखी, मनुष्य की परछाईं में (In the Shadow of Man)। फिर ह्यूगो के साथ मिल कर उसने और पुस्तकें लिखीं, ग्रब - बुश बेबी (Grub the Bush Baby), और निर्दोष हत्यारे (Innocent Killers)। ये पुस्तकें ह्यूगो द्वारा लिए गए चित्रों से सुसज्जित होती थीं। इन वर्षों में इन पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में कुछ तनाव उत्पन्न हो गए, और १९७४ में जेन और ह्यूगो का तलाक हो गया।

ग्रब को साथ लिए, जेन ने अफ्रीका में वन्य पशुओं के रहन-सहन का अध्ययन जारी रखा। ग्रब की बहुत से बनमानुषों और अन्य वानरों से दोस्ती हो गई।



जेन और उसके गुड्डे बनमानुष जुबली ने उस दिन बचपन के मुर्गियों के दड़बे से लेकर अब तक बहुत लम्बा सफर तय कर लिया था। डा. जेन गुडॉल अब एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक थीं, जिन्हें अपने शोध-कार्य के लिए कई पुरस्कार मिल चुके थे। वन्य पशुओं के संरक्षण और कल्याण के लिए जेन ने विश्व भर में अपनी पहचान बना ली थी। वह अपना कुछ समय अपने प्रिय स्थान गोम्बे में गुज़ारती, और बाकी समय पालो आल्टो विश्वविद्यालय, कैलिफ़ोर्निया, और दर-अस-सलाम विश्वविद्यालय, तंज़ानिया में, जहाँ वह छात्रों को पढ़ाती और प्रयोगशालाओं में शोध-कार्य करती।





जेन गुडॉल की कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। उसे अभी अपना अध्ययन पूरा करने में बहुत वर्ष और लगेंगे।

उसे आशा है कि बनमानुषों पर उसके शोध से पाषाण युग के हमारे पूर्वजों के जीवन पर नया प्रकाश पड़ेगा। उसका कहना है कि उसका काम तो अभी शुरू ही हुआ है।

लेखक के विषय में

एलेनोर कॉर का बचपन सस्केचेवान कनाडा में बीता था। अमेरिकन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन से बी. ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद वह बच्चो के लिए समाचार-पत्रों में स्तम्भ लिखने लगी। उन्होंने बहुत भ्रमण किया है, और इक्वेडोर में सबसे पहला बच्चो का पुस्तकालय उन्होंने ही प्रारम्भ किया। इस कार्य के बाद उन्हें पुस्तकालय विज्ञान (Library Science) में ऍम. ए. करने की प्रेरणा मिली।

एलेनोर कॉर इससे पहले पुतनम के लिए तीन पुस्तकें लिख चुकी हैं। इनमें से दो हैं नैसर्गिक जीवनियां, "एक विशालकाय पांडा की जीवनी" और "एक कंगारू की जीवनी"। तीसरी है चित्रों से सज्जित कहानियों की पुस्तक "मिश्रित रहस्य की सुगंध"।

कलाकार के विषय में

कीज़ द कीफ्ते अमेरिका और यूरोप के एक जनप्रिय चित्रकार हैं, जिन्होंने अनेक पुस्तकों को अपने चित्रों से सजाया है। वह अपनी पत्नी एमी और दो पुत्रों, ऑस्कर और कैस्पर के साथ हॉलैंड में रहते हैं। पुतनम के लिए उनकी यह पहली पुस्तक है।